उत्तराखण्ड भाषा संस्थान, देहरादून

उत्तराखण्ड भाषा संस्थान एवं कुमाउंनी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति कसार देवी, अल्मोड़ा के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय भाषा उत्सव के रूप में दिनांक 04, 05 एवं 06 नवम्बर, 2023 को पिथौरागढ़ में आयोजित राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन की विस्तृत आख्या

पृष्ठभूमि– उत्तराखण्ड भाषा संस्थान लोक भाषा व बोलियों के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार के लिए निरंतर कार्यरत है, मा. मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता एवं मा. भाषा मंत्री जी दिशा–निर्देशन में दिनांक 05 अप्रैल, 2023 को भाषा संस्थान की साधारण सभा एवं प्रबंधकार्यकारिणी समिति की बैठक में महत्वपूर्ण प्रस्ताव अनुमोदित किये गये है, उक्त समिति द्वारा प्रस्ताव संख्या–02 (07) में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा सम्मेलन योजना के अर्न्तगत साहित्यिक समारोहों का आयोजन उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों में किये जाने पर अनुमोदन प्रदान किया गया है। उत्तराखण्ड भाषा संस्थान द्वारा लोक भाषा एवं बोलियों के संरक्षण–सवंर्द्धन एवं प्रचार–प्रसार के उद्‌देश्य से लोक भाषा सम्मेलन, लोक भाषा एवं बोलियों के लेखकों को उत्तराखण्ड साहित्य गौरव सम्मान से सम्मानित करना, पुस्तक प्रकाशन हेतु अनुदान, प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, शोध परियोजना के अंतर्गत उत्तराखण्ड की भाषा बोलियों का भाषायी सर्वेक्षण, शोध पत्रिका का प्रकाशन आदि योजनाएं संचालित की जा रही है।

संस्थान की साधारण सभा एवं प्रबंधकार्यकारिणी समिति द्वारा दिये गये निर्देश 'साहित्यिक समारोहों का आयोजन उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों में किये जाएंगे' एवं भाषा अनुभाग, उत्तराखण्ड शासन के पत्र संख्या–322/XXX/08 (सा.)/2022–23 दिनांक 12.10. 2023 के साथ संलग्न श्री धमेन्द्र प्रधान, मा. मंत्री, शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता, भारत सरकार के पत्र का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु उत्तराखण्ड भाषा संस्थान एवं कुमाउंनी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति कसारदेवी, अल्मोड़ा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 04, 05 एवं 06 नवम्बर, 2023 को पिथौरागढ़ में भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकें देश भर के कुमाउंनी एवं लोक साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकार, कवि, लेखक, गीतकार, सास्कृतिक दलों द्वारा प्रतिभाग

किया गया, इस सम्मेलन में कुमाउनी भाषा का इतिहास, कुमाउनी भाषा/बोली का गद्य एवं पद्य साहित्य, नई शिक्षा नीति और लोकभाषा में शिक्षण, आधुनिक मीडिया और कुमाउनी भाषा, सांस्कृतिक सत्र जिसमें शगुन ऑखर, झोड़ा, छपेली, न्यौल, बैर, भगनौल, लोक विधाओं का प्रस्तुतिकरण, कुमाउनी लोक वाद्य यंत्रों का प्रस्तुतिकरण, कुमाउनी कवि सम्मेलन, कुमाउनी गीत संगीत संध्या, पुस्तक प्रदर्शनी, हस्तशिल्प उत्पादों और स्थानीय उत्पादों को प्रदर्शित करती हस्तशिल्प प्रदर्शनी, ऐपण प्रदर्शनी एवं विभिन्न लेखकों द्वारा रचित कहानी, कविता एवं अन्य साहित्यिक पुस्तकों का विमोचन किया गया।

राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन
प्रथम दिवस दिनांक 04 नवम्बर, 2023

उद्धाटन सत्र–

उत्तराखण्ड भाषा संस्थान एवं कुमाउंनी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति कसारदेवी, अल्मोड़ा के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय भाषा उत्सव के रूप में 'राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन' दिनांक 04 नवम्बर, 2023 को पिथौरागढ़ में आयोजित कार्यक्रम के पहले सत्र की शुरूवात मुख्य अतिथि श्री बिशन सिंह चुफाल (पूर्व मंत्री एवं विधायक डीडीहाट) एवं मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर की गई। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अशोक पंत ने सम्मेलन को संबोधित कर सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम की रूपरेखा रखते हुए उन्होंने बताया कि तीन दिनों के इस सम्मेलन में 'कुमाउनी भाषा अतीत, वर्तमान और भविष्य', 'भूमंडलीकरण के दौर में कुमाउनी भाषा', 'कुमाउनी के प्रचार प्रसार में संचार माध्यमों की भूमिका, नई पीढ़ी और कुमाउनी' जैसे तमाम विषयों पर संवाद होगा एवं कुमाउनी संस्कृति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम और कवि सम्मेलन भी आयोजित किया जाएगा।

समिति के सचिव डॉ. हयात सिंह रावत (अल्मोड़ा) ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कुमाउनी भाषा सम्मेलन की आवश्यकता, औचित्य और महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यह सम्मेलन कुमाउनी रचनाकारों और पाठकों के बीच सेतु का काम करने के साथ ही कुमाउनी भाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. कमला पंत (देहरादून) ने 'कुमाउनी भाषा और साहित्य : अतीत वर्तमान और भविष्य' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि अभिलेखीय प्रमाण बताते हैं कि एक भाषा के रूप में कुमाउनी का इतिहास काफी पुराना है और वर्तमान में कुमाउनी भाषा में साहित्य की सभी विधाओं में काफी लेखन हो रहा है। भविष्य हेतु हमें स्तरीय लेखन के साथ मानकीकरण की भी आवश्यकता है।

'उत्तराखंड भाषा संस्थान' की उपनिदेशक, सुश्री जसविंदर कौर ने उत्तराखंड भाषा संस्थान द्वारा उत्तराखंड की भाषाओं के उन्नयन के लिए किए जा रहे प्रयासों और संस्थान के क्रियाकलापों की निम्नानुसार विस्तार से जानकारी प्रतिभागियों को दी गई–

01. **उत्तराखण्ड साहित्य गौरव सम्मान 2022** योजना के अंतर्गत दिनांक 30 जून, 2023 को मा. मुख्यमंत्री जी, मा. भाषा मंत्री जी एवं प्रदेश के प्रबुद्ध साहित्यकारों की उपस्थिति में सम्मान समारोह आयोजित कर उत्तराखण्ड के हिन्दी, लोक भाषा, उर्दू एवं पंजाबी के 09 साहित्यकारों को उत्तराखण्ड साहित्य गौरव सम्मान–2022 से सम्मानित किया गया।
02. **विभिन्न भाषाओं में ग्रंथ प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता योजना** के अंतर्गत संस्थान द्वारा विज्ञापन प्रकाशित कर उत्तराखण्ड के लेखकों से पाण्डुलिपियां प्राप्त की गयी, उक्त पाण्डुलिपियों में से हिन्दी एवं लोक भाषा की श्रेष्ठ पाण्डुलिपियों का चयन कर 17 साहित्यकारों को पुस्तक प्रकाशन के लिए अनुदान प्रदान किया गया।
03. **लोक भाषा सम्मेलन** के अंतर्गत संस्थान द्वारा 30 जून से 01 जुलाई, 2023 तक दो दिवसीय लोक भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश के विभिन्न लोक भाषा के साहित्यकारों, कवियों एवं लेखकों द्वारा प्रतिभाग किया गया, इस सम्मेलन में निम्नखित विषयों पर परिचर्चा की गयी–

दिनांक 30 जून, 2023		
क्रम	सत्र	विषय
01	उद्‌घाटन सत्र	लोक भाषा सम्मेलन का उद्‌घाटन
	द्वितीय सत्र	लोक भाषा कवि सम्मेलन
दिनांक 01 जुलाई, 2023		
02	तृतीय सत्र	कुमाउनी भाषा का व्याकरण
		गढ़वाली भाषा का क्रमागत विकास
		गढ़वाली भाषा का लोक साहित्य
		मातृ भाषाओं में पत्रिका प्रकाशन की चुनौतियां

		उत्तराखण्ड की लोक भाषाओं का वर्तमान परिदृश्य
03	चतुर्थ सत्र / समापन सत्र	गढ़वाली भाषा में औच्चारणिक विभेद
		उत्तराखण्ड के लोक गीतों में समसामयिक परिवेश
		उत्तराखण्ड की उप बोलियां एवं अन्य भाषाएँ
		लोक साहित्य, लोक परम्पराएँ और आधुनिक कला माध्यम
		लोक साहित्य में नाटक व कहानी लेखन
		उत्तराखण्ड की जनजातीय बोली एवं भाषाओं को संरक्षित करने के उपाय

04. **शोध परियोजना** के अंतर्गत संस्थान द्वारा उत्तराखण्ड की भाषाओं का भाषायी सर्वेक्षण का कार्य करते हुए निम्नलिखित बोलियों एवं उपबोलियों के सर्वेक्षण का कार्य किया गया है, उक्त ग्रन्थ को प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है–

क्रम	कार्य करने वाले विद्वान का नाम	भाषा सर्वेक्षण के अन्तर्गत भाषा / बोली क्षेत्र
01	डॉ. भवानी दत्त काण्डपाल	दनपुरिया
02	डॉ. शेर सिंह पांगती	जोहारी बोली
03	श्री रतन सिंह जौनसारी	जौनसारी बोली
04	प्रो. शेर सिंह बिष्ट	कुमाऊँनी बोली, खस परजिया
05	श्रीमती अनीता चौहान	टिरियाली बोली
06	श्री महावीर रवाँल्टा,	रवाल्टी बोली
07	डॉ. सुरेश ममगाई	जाड़ बोली
08	श्री सुरेन्द्र पुण्डीर	जौनपुरी
09	डॉ. शोभा राम शर्मा,	राजी बोली
10	श्री भूपेन्द्र सिंह राणा	मारछा बोली
11	डॉ. यमुना दत्त रतूड़ी	टिरियाली बोली
12	डॉ. सुचित्रा मलिक	कौरवी बोली (खड़ी बोली)
13	श्री मुकेश नौटियाल	नागपुरी बोली

05. संस्थान की शोध पत्रिका केदार मानस का प्रकाशन स्त्री विशेषंक के रूप में किया जा रहा है।

06. **हिन्दी दिवस समारोह** संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14 सितम्बर, 2023 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मा. भाषा मंत्री जी एवं डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी (सांसद, पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व केन्दीय शिक्षा मंत्री), उत्तराखण्ड उच्च न्यालय के पूर्व रजिस्ट्रार जनरल श्री वी.के. महेश्वरी एवं लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक आकदमी की पूर्व प्रो. कुमुदनी नौटियाल द्वारा हिन्दी की उपयोगिता पर सारगर्भित व्याख्यान दिया गया।

07. **भाषायी प्रतियोगिताओं का आयोजन** इस योजना के अंतर्गत संस्थान द्वारा निबंध, कहानी, कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन कर दिनांक 14 सितम्बर, 2023 को हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर 36 प्रतिभागियों को पुरस्कार राशि, स्मृति चिह्न प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

08. **प्रतिभावान छात्रों को पुरस्कृत करना** दिनांक 14 सितम्बर, 2023 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं उत्तराखण्ड मदरसा परिषद के 188 मेधावी छात्र–छात्राओं को सम्मान राशि एवं स्मति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। साथ ही श्री कौर ने संस्थान द्वारा निकट भविष्य में उत्तराखण्ड के साहित्यकारों को सम्मानित करना, प्रशिक्षण कार्यक्रम, शोध परियोजना, डिजिटल एवं ई. पुस्तकालय की स्थापना आदि योजनाएं संचालन के संबंध में सूचना प्रदान की गयी।

पत्रकार बी.डी. कसनियाल (पिथौरागढ़) ने कुमाउनी भाषा और साहित्य, संस्कृति के भविष्य पर अपनी बात रखते हुए कहा कि किसी भाषा का भविष्य उसके बच्चों और युवा पीढ़ी के हाथ में होता है। अतः कुमाउनी भाषा के विकास की इस मुहिम में हमें अधिकाधिक बच्चों और युवाओं को जोड़ना होगा। हमें कुमाउनी भाषा के साथ ही कुमाऊँ क्षेत्र में बोली जाने वाली अन्य बोलीयों एवं उप बोलियों का सम्मान करना होगा, साथ ही कुमाउनी भाषा की उप भाषाऐं जैसे, कुमय्याँ, सोर्याली, अस्कोटी, सीराली, खसपर्जिया, चौगर्खिया, गंगोली, पछाईं, दनपुरिया, रौ–चौभैंसी आदि के मानकीकरण कर लिखने की एक भाषा तैयार करनी होगी, हमें कुमाउनी को भाषाई तौर पर इतनी मजबूती प्रदान करनी होगी कि कुमाउनी साहित्य का अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो सके।

सत्र के दौरान प्रो. दीपा गोबाड़ी (हल्द्वानी) द्वारा लिखित कुमाउनी कविता संग्रह 'उजास' व भारती पांडे (देहरादून) द्वारा लिखित कुमाउनी कविता संग्रह 'चौसात' का विमोचन किया गया।

मुख्य अतिथि बिशन सिंह चुफाल ने कहा कि भाषा के प्रचार–प्रसार में इस तरह के सम्मेलनों की अपनी भूमिका है। भाषा के संरक्षण के लिए सभी लोगों को साथ मिलकर काम करने की जरूरत है, उन्होंने कहा लोक बोलीयां गांव में जन्म लेती है, गॉव के लोग इस बोलीयों को सदियों से पालते हुए आ रहे हैं, घर की दानी, नानी, बुर्जुग सभी इस बोलियों के संवाहक है, यह घर, गांव, समाज से होते हुए पूरे देश–विदेश में फैलती हैं, इस समय कुमाउनी बोलने वाले चाहे वह नासा, इसरो में काम करते हों लेकिन जब दो कुमाउनी लोग मिलते हैं, तो वह अपनी लोक बोली में ही बात करते हैं, वर्तमान में आधुनिक पीढ़ी के कुछ लोग कुमाउनी बोलने में झिझकते हैं, हम लोगों को उनकी झिझक दूर करनी है, लोक बोलियों जो मिठास है वह अन्य भाषाओं में नहीं होती है, दूर देश–विदेश में बैठा व्यक्ति जब अपने गीत, संगीत को सुनता है, तो वह बेचैन हो जाता है। उन्होंने अपने जीवन की विभिन्न पहलुओं का उल्लेख करते हुए कहा की मुझे कुमाउनी बोलने पर गर्व है, उन्होने सम्पूर्ण व्याख्यान कुमाउनी भाषा में दिया गया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. नरेन्द्र सिंह भंडारी (पूर्व कुलपति : सोबन सिंह जीना, विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा) ने कहा कि भाषा हमारी पहचान है, हमारे अस्तित्व से जुड़ा सवाल है। भाषा और संस्कृति आपस में जुड़े हैं। बिना भाषा के संस्कृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भाषा को संरक्षित किए जाने की आवश्यकता है तभी संस्कृति भी बच पाएगी। इसके लिए कई स्तरों पर समन्वित प्रयासों की आवश्यकता होगी। हमने सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा में कुमाउनी भाषा में स्नातक कक्षाओं में प्रवेश प्रारंभ किये गये। हम भाषा संस्थान एवं सरकार से अनुरोध करते हैं कि कुमाउनी भाषा को सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा के सभी परीसरों में एवं कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल व उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी में कुमाउनी भाषा की पढ़ाई शुरू की जाए। सत्र का संचालन जनार्दन उप्रेती (पिथौरागढ़) द्वारा किया गया।

सत्र के दौरान 'पूरन बोरा एवं साथी' छोलिया दल, 'जै नंदा लोक कला केन्द्र, अल्मोड़ा के कलाकारों तथा 'जे. बी. मेमोरियल मानस एकेडमी' पिथौरागढ़ व राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिण, पिथौरागढ़ के बच्चों द्वारा कुमाउनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई।

कुमाउनी भाषा सम्मेलन

सम्मेलन

राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन

प्रथम दिवस दिनांक 04 नवम्बर, 2023

द्वितीय सत्र–

सम्मेलन के पहले दिन का दूसरा सत्र 'भूमंडलीकरण के दौर में लोकभाषाओं के सामने चुनौतियां और समाधान' पर केंद्रित था। सत्र में अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए लेखक महेश पुनेठा (पिथौरागढ़) ने कहा कि भूमंडलीकरण के इस दौर में लोक भाषाओं पर बड़ा संकट है। आज भूमंडलीकरण और उदारीकरण के प्रभाव में विश्व की 2464 भाषाऐं लुप्त होने की कगार पर हैं। इसमें 197 भारतीय भाषाएं भी शामिल हैं। भूमंडलीकरण में हमारी जीवन प्रणालियों को बदल कर रख दिया है। जिससे हमारी भाषा भी अछूती नहीं है। जीवन प्रणालियों में आए बदलाव ने शब्दों में भी बदलाव कर दिया है। यही कारण है कि आज कई शब्द हमारे बीच से लुप्त हो चुके हैं और कई शब्द ऐसे हैं जो लुप्त होने वाले हैं। इस दिशा में ध्यान देने और गंभीरता से काम करने की जरूरत है।

पत्रकार चारू तिवारी (दिल्ली) ने कहा कि बेशक आज लोकभाषाओं के समक्ष अस्तित्व का संकट है। भूमंडलीकरण एक ऐसी चुनौती है जो लोकभाषाओं के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। आज जरूरत भाषा को संरक्षित करते हुए उन शब्दों को वापस लाने की है जो हमारी श्रम आधारित अर्थव्यवस्था के बीच से भूमंडलीकरण ने चुरा लिए हैं। हम भूमंडलीकरण का मुकाबला तभी कर सकते हैं जब हम इस अभियान को एक व्यापक आंदोलन में तबदील कर सकें। सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. दिनेश जोशी (पिथौरागढ़) ने भूमंडलीकरण के दौर में पत्र–पत्रिकाओं पर संकट की बात करते हुए कुमाउनी में छपने वाली विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं का संदर्भ सामने रखा। उन्होंने कहा कि कुमाउनी भाषा के प्रचार–प्रसार में स्वयंसेवी संस्थाओं की भी सार्थक भूमिका हो सकती है, उनका सामाजिक संपर्क, अनुभव भूमंडलीकरण की समस्या से निबटने में कारगर साबित होगा।

भारती पांडे (देहरादून) ने भूमंडलीकरण के दौर में कुमाउनी संस्कृति पर अपनी बात रखी कि भूमंडलीकरण के इस दौर में संस्कृति भी अछूती नहीं है। दुनिया भर में भूमंडलीकरण ने स्थानीय संस्कृतियों को नुकसान पहुंचाया है।

हेम पंत (रूद्रपुर) ने भूमंडलीकरण के दौर में लोक भाषाओं के संरक्षण और संवर्द्धन में सामाजिक व संचार माध्यमों की भूमिका पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि आज हमारे पास तेज संचार माध्यम हैं, सामाजिक मीडिया है जिनका प्रभावी इस्तेमाल भाषा के संरक्षण और प्रचार–प्रसार में किया जा सकता है।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में नीरज पंत (अल्मोड़ा) ने कहा कि भूमंडलीकरण के खतरे से तभी निबटा जा सकता है जब इसके लिए संगठित प्रयास किए जायें। भाषा और संस्कृति के संरक्षण के लिए जरूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं से शुरू करे। कुमाउनी में लेखन को बढ़ावा देने के साथ ही पढ़ने वालों की संख्या भी बढ़ानी होगी। वक्ताओं के रूप में प्रकाश पुनेठा (पिथौरागढ़) और वरिष्ठ पत्रकार दिनेश पंत (पिथौरागढ़) ने भी इस सत्र में अपनी बात रखी। सत्र का संचालन राजीव जोशी (पिथौरागढ़) ने किया।

सत्र में मोहन जोशी (गरूड़) की पुस्तक 'बागेश्वराक अमर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी' व डॉ. धाराबल्लभ पांडेय 'आलोक'(अल्मोड़ा) की पुस्तक 'मिठास' (कुमाउनी कविता व गीत संग्रह) का विमोचन किया गया।

सांस्कृतिक सत्र–

सम्मेलन के प्रथम दिन आखिरी सत्र सांस्कृतिक सत्र के रूप में आयोजित किया गया। इस सत्र में विभिन्न जगहों से आए कुमाउनी सांस्कृतिक दलों व कलाकारों ने प्रस्तुति दी। इस दौरान कुमाउनी संस्कृति पर आधारित झोड़ा, चांचरी, न्यौली, बैर, भजन जैसी अनेक विधाओं में अपनी प्रस्तुतियां दी। सत्र में 'जै नंदा लोक कला केन्द्र' अल्मोड़ा, 'पूरन बोरा एंड पार्टी' अल्मोड़ा, दीवान कनवाल, नारायण सोराड़ी, जगमोहन आगरी, कमलनयन, प्रवीण प्रकाश, गिरीश पुजारा, कैलाश कुमार, रवि शास्त्री, मनोज रावत आदि तमाम कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दी। पूरन बोरा (अल्मोड़ा) द्वारा प्राचीन वाद्य बिणाई व चंदन बोरा (अल्मोड़ा) द्वारा

राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन
द्वितीय दिवस दिनांक 05 नवम्बर, 2023

सम्मेलन के दूसरे दिन पहले सत्र की शुरूआत में सम्मेलन संयोजक डॉ. अशोक पंत द्वारा विगत दिवस संपन्न गतिविधियों का पुनरावलोकन किया गया। समिति सचिव डॉ. हयात सिंह रावत द्वारा कुमाउनी में लेखन के वर्तमान परिदृश्य पर नजर दौड़ाई गई। इस दौरान यह तथ्य सामने आया कि वर्तमान में साहित्य की सभी विधाओं—कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, साक्षात्कार, शब्दचित्र, ब्यंग्य, नाटक आदि में कुमाउनी लेखक रचना कार्य कर रहे हैं। कुमाउनी में वर्तमान में लगभग छह सौ लेखक हैं जो सक्रियता से लेखन कर रहे हैं।

यह सत्र मुख्य रूप से कुमाउनी साहित्य में आधुनिक जीवन मूल्य विषय पर केन्द्रित रहा। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. दीपा गोबाड़ी (हल्द्वानी) द्वारा व्याख्यान दिया गया। उन्होंने कहा कि कुमाउनी भाषा और साहित्य में हमें सभी तरह के आधुनिक जीवन मूल्यों का समावेश मिलता है। खास तौर पर कुमाउनी कहानी और उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने अपनी बात को केन्द्रित किया। शेर सिंह मेहता और श्याम सिंह कुटौला की रचनाओं का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इनकी रचनाओं में जीवन मूल्यों का समावेश बेहद बारीक लेकिन स्वाभाविक ढंग से मिलता है।

डॉ. पवनेश ठकुराठी (पिथौरागढ़) द्वारा 'कुमाउनी कविता साहित्य में निहित आधुनिक जीवन मूल्य' पर अपनी बात रखी गई। गिर्दा, घनानंद पांडे 'मेघ', शेरदा अनपढ़, हीरा सिंह राणा जैसे लेखकों की रचनाओं का संदर्भ लेते हुए उन्होंने अपनी बात रखी और बताया कि कुमाउनी कविता में जीवन मूल्यों की विविधता आसानी से देखी जा सकती है।

चिंतामणी जोशी (पिथौरागढ़) ने कथेतर साहित्य में जीवन मूल्यों पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि हालांकि कुमाउनी में अभी कथेतर साहित्य में कम काम हुआ है। यहां भी कुमाउनी साहित्य में आधुनिक जीवन मूल्य स्थापित होने चाहिए। कुमाउनी समालोचना, यात्रा वृतांत, व्यंग्य, साक्षात्कार आदि में सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्य, महिला अधिकार जैसे तमाम आधुनिक जीवन मूल्यों का समावेश करना होगा।

महेन्द्र ठकुराठी (अल्मोड़ा) द्वारा कुमाउनी लोक संगीत में आधुनिक जीवन मूल्यों पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि लोक संगीत हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है और इसका जन्म भी हमारे लोक जीवन से होता है। अतः स्वाभाविक तौर पर हमारा जवीन और जीवन मूल्य हमारे लोक संगीत में प्रतिबिंबित होते हैं।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में भाषा बचाने के सवाल पर पी.सी. तिवारी (अल्मोड़ा) ने कहा कि सिर्फ भाषा ही नहीं पूरी जीवन शैली और जीवन को बचाने की चुनाती हमारे सामने खड़ी है। भाषा का सवाल बेहद अहम है। अतः इसके लिए संघर्ष करना जरूरी है। सत्र में किरन जोशी (देहरादून), पूर्व विधायक काशी सिंह ऐरी, नगर पालिका पूर्व अध्यक्ष जगत सिंह खाती व नगर पालिका पिथौरागढ़ के अध्यक्ष राजेन्द्र रावत तथा पद्मश्री बसंती बहन द्वारा भी अपनी बात रखी गई। सत्र का संचालन रमेश जोशी (पिथौरागढ़) द्वारा किया गया।

सत्र के दौरान डॉ. गिरीश अधिकारी (गरूड़) द्वारा लिखित कुमाउनी खंड काव्य ‘किरसाण’, दिनेश भट्ट द्वारा लिखित कुमाउनी आलेख संग्रह ‘समाज–शिक्षा–विज्ञानकि बात’ और डॉ. गजेन्द्र ‘बटोही’ द्वारा संपादित ‘अविचल दृष्टिकोण’ पत्रिका का विमोचन किया गया।

उत्तराखण्ड भाषा संस्थान देहरादून
कुमाउनी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति व
पहरू कुमाउनी मासिक, कसारदेवी, अल्मोड़ा
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन
04,05 व 06 नवम्बर, 2023, स्थान: पिथौरागढ़
आपूं लोगनक स्वागत व अभिनंदन

दूसरा सत्र –

सम्मेलन के दूसरे दिन का दूसरा सत्र कुमाउनी भाषा की विभिन्न उप बोलियों में संबंध पर केन्द्रित रहा। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. दिवा भट्ट (हल्द्वानी) ने कुमाउनी भाषा की विविधता पर बात की। उन्होंने कहा विविधता के बीच हमें कुमाउनी के मानकीकरण की तरफ भी बढ़ना होगा और मानक शब्दकोशों का निर्माण करना होगा। डॉ. दीप चंद्र चौधरी (पिथौरागढ़) ने अपने संबोधन में कुमाउनी शब्दों की उत्पत्ति पर बात की तथा उन्होंने कुमाउनी की पूर्वी और पश्चिमी उपबोलियों कें बीच संबंधों पर प्रकाश डाला।

उत्तराखण्ड भाषा संस्थान देहरादून
कुमाउनी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति व
पहरू कुमाउनी मासिक पत्रिका, कसारदेवी, अल्मोड़ा
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन
पहरू

कुमाउनी भाषा सम्मेलन
04,05 व 06 नवम्बर, 2023
में आप सादर आमंत्रित हैं।
राष्ट्रीय

तीसरा सत्र–

तीसरा सत्र कवि सम्मेलन रहा। इस सत्र निम्नलिखित कवियों द्वारा अपनी कुमाउनी कविताओं का पाठ किया गया। अध्यक्षता प्रो. दीपा गोबाड़ी (हल्द्वानी) और संचालन नीरज पंत (अल्मोड़ा) द्वारा किया गया। कवि सम्मेलन में डॉ. कीर्तिबल्लभ शक्टा (चंपावत), बिशन दत्त जोशी 'शैलज' (दिल्ली), जनार्दन उप्रेती (पिथौरागढ़), डॉ. दिवा भट्ट (हल्द्वानी), डॉ. धाराबल्लभ पांडे (अल्मोड़ा), डॉ. आनंदी जोशी (पिथौरागढ़), डॉ. भुवन चंद्र जोशी (चंपावत), कंचन तिवारी (अल्मोड़ा), ललित तुलेरा (गरूड़), आशा सौन (पिथौरागढ़), प्रकाश तिवारी (हल्द्वानी), दीपा पांडे (लोहाघाट), आनंद सिंह बिष्ट (अल्मोड़ा), नीरज जोशी (पिथौरागढ़), डॉ. जगदीश चंद्र पंत 'कुमुद' (चकरपुर), प्रो. के.सी. जोशी (अल्मोड़ा), एल.पी.जोशी(पिथौरागढ़), बीना फुलेरा (हल्द्वानी), चिंतामणि जोशी (पिथौरागढ़), योगेन्द्र दत्त बिष्ट (सितारगंज), विपिन चंद्र जोशी 'कोमल' (अल्मोड़ा), दिनेश भट्ट (पिथौरागढ़), देवकीनंदन कांडपाल (काकड़ीघाट), भुवन चंद्र सुयाल (सुयालबाड़ी), अनीता जोशी (पिथौरागढ़), सोनू उप्रेती 'सांची' (सोमेश्वर), मुन्नी पांडे (गंगोलीहाट), दिनेश भट्ट (पिथौरागढ़), गोविंद सिंह बिष्ट (पिथौरागढ़), प्रकाश चंद्र जोशी 'शूल' (चंपावत), घनश्याम अंडोला (बनकोट), सी.पी. जोशी (द्वाराहाट), मुन्नी टम्टा (पिथौरागढ़), कुलदीप उप्रेती (चंपावत), मथुरादत्त चौसाली (पिथौरागढ़), दीपक भाकुनी (सोमेश्वर), डॉ. दीप चंद्र चौधरी (पिथौरागढ़), जगदीश गेवड़िया (मासी), लक्ष्मी बल्दिया (पिथौरागढ़), राजेश्वरी पांडे (पिथौरागढ़), चंचल गोस्वामी (पिथौरागढ़) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन

तृतीय दिवस दिनांक 06 नवम्बर, 2023

पहला सत्र कुमाउनी भाषा, संस्कृति और नई पीढ़ी पर केंद्रित था। विमर्श सत्र के रूप में संचालित इस सत्र में वक्ताओं ने कुमाउनी भाषा और संस्कृति से नई पीढ़ी को जोड़ने के विषय पर अपना वक्तव्य रखा। वक्ताओं के रूप में डॉ. पीतांबर अवस्थी (पिथौरागढ़) ने कहा कि नई पीढ़ी ही किसी भी समाज की भाषा को आगे लेकर जाती है। अतः नई पीढ़ी को अपनी भाषा और संस्कृति से परिचित कराना जरूरी है। इसके लिए स्कूल और कॉलेज स्तर पर विभिन्न गतिविधियां आयोजित करनी होंगी और नई पीढ़ी को इसके लिए प्रेरित करना होगा। दिनेश भट्ट (पिथौरागढ़) ने अपनी बात रखते हुए कहा कि कुमाउनी भाषा में नई पीढ़ी के लिए अधिकाधिक साहित्य रचे जाने की आवश्यकता है। हमें चाहिए कि उनकी भाषा में उनके लिए साहित्य रचा जाना चाहिए।

जयमाला देवलाल (पिथौरागढ़) ने कहा कि नई पीढ़ी को अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़ने के लिए आधुनिक संचार माध्यमों की मदद भी लेनी होगी। जब तक हम आधुनिक पीढ़ी के माध्यमों को नहीं अपनाऐंगे, उनसे जुड़ाव मुश्किल होगा।

मोहन जोशी (पिथौरागढ़) ने कहा कि इस दिशा में एक ठोस रणनीति बनाकर गंभीरता से काम करना होगा। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. के.सी. जोशी (अल्मोड़ा) ने कहा कि नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति और भाषा से जोड़ना आज की आवश्यकता है। हमें नई पीढ़ी के मनोविज्ञान को समझकर उनको इस तरफ लाना होगा, इसके लिए साहित्यकारों और संस्कृति कर्मियों को मिलकर काम करने की जरूरत है।

अतिथि के रूप में पूर्व सांसद प्रदीप टम्टा भी इस सत्र में शामिल हुए। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भाषा का सवाल हमारे लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि जीवन से जुड़ा कोई अन्य मुद्दा। कुमाउनी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज करने का मामला एक राजनीतिक मुद्दा है जिस पर सरकार को निर्णय लेना है। इस पर जल्दी निर्णय लिया जाना चाहिए।

04,05 व 06 नवम्बर

स्थान: पिथौरागढ़
पन्द्रऊं
राष्ट्रीय
BINA

कुमाउनी भाषा सम्मेलन
04,05 व 06 नवम्बर, 2023, स्थान: पिथौरागढ़
आपूं लोगनक स्वागत व अभिनंदन

उत्तराखण्ड भाषा संस्थान देहरादून
कुमाउनी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति व
पहरू कुमाउनी मासिक पत्रिका, कसारदेवी, अल्मोड़ा
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन
04,05 व 06 नवम्बर, 2023, स्थान: पिथौरागढ़
आपूं लोगनक स्वागत व अभिनंदन
विशिष्ठ अतिथि
विशिष्ठ अतिथि
विशिष्ठ अतिथि

दूसरा सत्र–

सम्मेलन के तीसरे दिन का दूसरा सत्र समापन सत्र के रूप में संचालित किया गया। जो कि कुमाउनी भाषा के विविध आयामों पर खुली चर्चा पर केन्द्रित रहा। इस सत्र में प्रतिभागियों द्वारा कुमाउनी भाषा की दशा, दिशा और भविष्य पर चर्चा की। वक्ताओं ने कुमाउनी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज किए जाने की पुरजोर पैरवी की। वक्ताओं ने कुमाउनी भाषा में स्तरीय लेखन को बढ़ावा देने के लिए लेखन कार्यशालाओं के आयोजन की बात भी की। दैनिक बोलचाल में कुमाउनी के अधिकाधिक प्रयोग की आवश्यकता जताते हुए बच्चों को इसके लिए प्रेरित करने की बात भी की गई।

समापन संबोधन में सम्मेलन संयोजक डॉ. अशोक पंत, समिति सचिव डॉ. हयात सिंह रावत तथा समिति उपाध्यक्ष जमन सिंह बिष्ट द्वारा उत्तराखंड भाषा संस्थान देहरादून, सभी प्रतिभागियों, सांस्कृतिक दलों, कलाकारों, प्रदर्शनी लगाने वालों, पत्रकार बंधुओं व स्थानीय सहयोगियों का आभार प्रकट किया गया तथा सभी प्रतिभागियों को प्रतीक चिन्ह भेंट किए गए।

सम्मेलन में पारित प्रस्ताव –

1. कुमाउनी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए।
2. उत्तराखंड सरकार द्वारा कुमाउनी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किए जाने बावत उत्तराखंड विधानसभा में संकल्प पारित कर केंद्र सरकार को भेजा जाए।
3. सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा, कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल व उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी में स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं में कुमाउनी भाषा की पढ़ाई शुरू की जाए।
4. उत्तराखंड में विद्यालयी शिक्षा में कक्षा एक से इंटरमीडिएट तक हर कक्षा में एक विषय के रूप में कुमाउनी भाषा की पढ़ाई शुरू की जाए।
5. उत्तराखंड अधीनस्थ चयन सेवा आयोग व उत्तराखंड लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं में कुमाउनी भाषा, साहित्य व संस्कृति से संबंधित प्रश्न अनिवार्य रूप से शामिल किए जाऐं।

6. उत्तराखंड में विद्यालयी पाठ्यक्रम में संगीत विषय में कुमाउनी लोक संगीत, लोक धुनें, बैठ व खड़ी होली तथा कला विषय में स्थानीय चित्र कला 'ऐपण' को भी शामिल किया जाए।
7. उत्तराखंड सरकार द्वारा उत्तराखंड भाषा संस्थान के माध्यम से साहित्यकार सम्मान व पुस्तक प्रकाशन सहायता योजना शुरू किए जाने का यह सम्मेलन हार्दिक स्वागत करता है। साथ ही मांग करता है कि कुमाउनी भाषा के साहित्यकारों के पुरस्कार/सम्मान हेतु कम से कम 5 लाख रूपये वार्षिक बजट का प्रावधान किया जाए तथा कुमाउनी साहित्यकारों को गुमानी पंत, गौरीदत्त पांडे 'गौर्दा', शेर सिंह बिष्ट 'अनपढ़' व बहादुर बोरा 'श्रीबंधु' के नाम से पुरस्कार/सम्मान दिए जाएं। इसी प्रकार पुस्तक प्रकाशन सहायता के रूप में दी जाने वाली धनराशि हेतु कुमाउनी भाषा के लिए कम से कम दस लाख रूपये वार्षिक बजट का प्रावधान किया जाए।

8. कुमाऊं मंडल में स्थापित अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालयों में भी कक्षा एक से इंटरमीडिएट तक एक विषय के रूप में कुमाउनी भाषा की पढ़ाई अनिवार्य रूप से की जाए।

के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित
राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
राष्ट्रीय कुमाउनी भाषा सम्मेलन
INDIA

प्रदर्शनी–

कुमाउनी भाषा, साहित्य और संस्कृति, कला व शिल्प पर आधारित कई प्रदर्शनियां भी सम्मेलन का हिस्सा रही।

कुमाउनी पुस्तक प्रदर्शनी–

सम्मेलन के दौरान कुमाउनी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति द्वारा कुमाउनी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में कुमाउनी भाषा की अलग–अलग विधाओं में प्रकाशित पुस्तकें प्रदर्शित की गई। जिसमें कुमाउनी के कई प्रसिद्ध और नवोदित लेखक शामिल रहे। इसके अतिरिक्त अविचल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कुमाउनी पुस्तकों को भी सम्मेलन में प्रदर्शित किया गया।

नवोदय कला केन्द्र, पिथौरागढ़ द्वारा हिलजात्रा को प्रदर्शित करती मुखौटा प्रदर्शनी आयोजित की गई। भाव राग ताल अकादमी, पिथौरागढ़ द्वारा भी कुमाउनी सांस्कृतिक आयामों को दर्शाती मुखौटा प्रदर्शनी आयोजित की गई। अन्य प्रदर्शनियों में पुरातात्विक वस्तुओं पर आधारित प्रदर्शनी, ऐपण पर आधारित प्रदर्शनियां, स्थानीय उत्पादों पर आधारित प्रदर्शनियां, लोक साहित्य पर आधारित प्रदर्शनी आकर्षण का केन्द्र रहीं।